



परीक्षा-गुरु प्रकरण-२२

संशय

हिन्दी
ADDA

परीक्षा-गुरु प्रकरण-२२

संशय

अज्ञपुरुष श्रद्धा रहित संशय युत बिनशाय॥

बि ना श्रद्धा दुहुं लोकमें ताकों सुख न लखाय॥

श्रीमद्भगवद्गीता॥

लाला ब्रजकिशोर उठकर कपड़े नहीं उतारनें पाएथे इतनें में हरकिशोर आ पहुँचा.

"क्यों ! भाई ! आज तुम अपने पुराने मित्रसे कैसे लड़ आए ?" ब्रजकिशोर ने पूछा.

"इस्सै आपको क्या ? आपके हां तो घीके दिए जल गए होंगे" हरकिशोरनें जवाब दिया.

"मेरे हां घीके दिये जलनें की इस्में कौन्सी बात थी ?" ब्रजकिशोर ने पूछा.

"आप हमारी मित्रता देखकर सदैव जला करते थे आज वह जलन मिट गई"

"क्या तुम्हारे मनमें अब तक यह झूटा बहम समा रहा है ?" ब्रजकिशोरनें पूछा.

"इस्में कुछ संदेह नहीं" हरकिशोर हुज्जत करनें लगा. मैं ठेठसै देखता आता हूँ कि आप मुझको देखकर जलते हैं. मेरी और मदनमोहन की मित्रता देखकर आपकी छाती पर सांप लोटता है. आपनें हमारा परस्पर बिगाड़ करनेके लिये कुछ थोड़े उपाय किये ? मदनमोहनके पिताको थोड़ा भड़काया ? जिस दिन मेरे लड़के की बारातमें शहरके सब प्रतिष्ठित मनुष्य आये थे उन्को देखकर आपके जीमें कुछ थोड़ा दुःख हुआ ? शहरके सब प्रतिष्ठित मनुष्योंसै मेरा मेल देखकर आप नहीं कुढ़ते ? आप मेरी तारीफ सुनकर कभी अपने मनमें प्रसन्न हुए ? आपनें किसी काममें मुझको सहायता दी. जब मैंने अपने लड़के के बिबाहमें मजलिस की थी आपनें मजलिस करनेसै मुझे नहीं रोका ? लोगोंके आगे मुझको बावला नहीं बताया ? बहुत कहनें सै क्या है ? आज ही मदनमोहन का मेरा बिगाड़ सुन्कर कचहरीसै वहां झटपट दोड़ गए और दो घण्टे एकांतमें बैठकर उस्को अपनी इच्छानुसार पट्टी पढ़ा दी परन्तु मुझको इन बातोंकी क्या परवा है ? आप और वह दोनों मिलकर मेरा क्या करसक्ते हो ? मैं सब समझलूंगा."

लाला ब्रजकिशोर ये बातें सुन, सुनकर मुस्कराते जाते थे. अब वह धीरज सै बोले "भाई ! तुम बृथा बहम का भूत बनाकर इतना डरते हो. इस बहमका ठिकाना है ? तुम तत्काल इन बातोंकी सफाई करते चलेजाते तो मनमें इतना बहम सर्वथा नहीं रहता. क्या स्वच्छ अन्तःकरण का यही अर्थ है ? मुझको जलन किस बात पर होती ? तुम अपना सब काम छोड़कर दिन भर लोगोंकी हाज़री साधते फिरोगे, उन्की चाकरी करोगे, उन्को तोहफा तहायफ दोगे ? दस, दस बार मसाल लेकर उन्के घर बुलाने जाओगे तो वह क्या न आवेंगे ? अपने गांठ की दौलत खर्च करके उन्को नाच दिखाओगे तो वह क्यों न तारीफ करेंगे ? परन्तु यह तारीफ कितनी देरकी, वाह वाह कितनी देर की ? कभी तुम पर आफत आ पड़ेगी तो इन्मेंसै कोई तुम्हारी सहायता

को आवेगा ? इस खर्चसँ देशका कुछ भला हुआ ? तुम्हारा कुछ भला हुआ ? तुम्हारी संतान का कुछ भला हुआ ? यदि इस फिज़ूल खर्ची के बदले लड़के के पढ़ाने लिखाने में यह रुपया लगाया जाता, अथवा किसी देश हितकारी काममें खर्च होता तो निस्सन्देह बड़ाई की बात थी परन्तु मैं इस्में क्या तारीफ करता, क्या प्रसन्न होता, क्या सहायता करता. मुझको तुम्हारी भोली -भोली बातोंपर बड़ा आश्चर्य था, इसी वास्तै मैंने तुमको फिज़ूल खर्ची सँ रोका था, तुमको बावला बताया था परन्तु तुम्हारी तरफकी मेरी मनकी प्रीतिमें कुछ अन्तर कभी नहीं आया, क्या तुम यह बिचारते हो कि जिससँ सम्बंध हो उसकी उचित अनुचित हरेक बातका पक्षपात करना चाहिये ? इन्साफ़ अपने वास्ते नहीं केवल औरोंके वास्ते है ? क्या हाथ में डिम-डिम लेकर सब जगह डोंडी पीटे बिना सच्ची प्रीति नहीं मालूम होती ? इन सब बातों में कोई बात तुम्हारी बड़ाईके लायक न हो तो भी तुम को प्रसन्न देखकर प्रसन्न होना तो घर फूंक तमाशा देखना है. मैं यह नहीं कहता कि मनुष्य ऐसे कुछ काम न करे. समय, समय पर अपने बूते मुजिब सबकाम करने योग्य हैं परन्तु यह मामूली कारवाई है. जितना वैभव अधिक होता है उतनी ही धूमधाम बढ़ जाती है इस लिये इस्में कोई खास बात नहीं पाई जाती है. मैं चाहता हूँ कि तुम सँ कोई देश हितैषी ऐसा काम बनें जिसमें मैं अपने मनकी उमंग निकाल सकूँ. मनुष्य को जलन उस मौकेपर हुआ करती है जब वह आप उस लायक न हो परन्तु तुम को जो बड़ाई बड़े परिश्रम सँ मिली है वह ईश्वर की कृपा सँ मुझ को बेमहनत मिल रही हैं. फिर मुझको जलन क्यों हो ? तुम्हारी तरह खुशामद कर के मदनमोहन सँ मेल किया चाहता तो मैं सहज में करलेता. परन्तु मैंने आप यह चाल पसन्द न की तो अपनी इच्छा सँ छोड़ी हुई बातों के लिये मुझ को जलन क्यों हो ? जलन की वृत्ति परमेश्वर ने मनुष्य को इस लिये दी है कि वह अपने सँ ऊंची पदवी के लोगों को देखकर उचित रीति सँ अपनी उन्नति का उद्योग करे परन्तु जो लोग जलन के मारे औरों का नुकसान करके उन्हें अपनी बराबर का बनाया चाहते हैं, वह मनुष्य के नाम को धब्बा लगाते हैं, मुझ को तुम सँ केवल यह शिकायत थी और इसी विषय में तुम्हारे विपरीत चर्चा करनी पड़ी थी कि तुमने मदनमोहन सँ मित्रता करके मित्र के करने का काम न किया. तुमको मदनमोहन के सुधारने का उपाय करना चाहिये था, परन्तु मैंने तुम्हारे बिगाड़ की कोई बात नहीं की. हां इस बहम का क्या ठिकाना है ? खाते, पीते, बैठते, उठते, बिना जाने ऐसी सँकड़ों बातें बन जाती हैं कि जिन्का बिचार किया करें तो एक दिन मैं बावले बन जायं. आए तो आए क्यों, बैठे तो बैठे क्यों, हँसे तो हँसे क्यों, फलाने सँ

क्या बात की. फलाने सै क्यों मिले ? ऐसी निरर्थक बातों का बिचार किया करें तो एक दिन काम न चले. छुटभैये सैंकड़ों बातें बीच की बीच में बनाकर नित्य लड़ाई करा दिया करें. पर नहीं अपने मन को सदैव दृढ़ रखना चाहिये. निर्बल मन के मनुष्य जिस तरह की जरा जरासी बातों में बिगड़ खड़े होते हैं दृढ़ मन के मनुष्य को वैसी बातों की खबर भी नहीं होती इसलिये छोटी, छोटी बातों पर बिशेष बिचार करना कुछ तारीफ की बात नहीं है और निश्चय किए बिना किसी की निंदित बातों पर विश्वास न करना चाहिये. किसी बात में संदेह पड़ जाय तो स्वच्छ मन सै कह सुनकर उसकी तत्काल सफाई कर लेनी अच्छी है क्योंकि ऐसे झूटे, झूटे वहम संदेह और मनःकल्पित बातों सै अबतक हज़ारों घर बिगड़ चुके हैं."

"खैर ! और बातों में आप चाहें जो कहें परन्तु इतनी बात तो आप भी अंगीकार करते हैं कि मदनमोहन की और मेरी मित्रता के विषय में आपने मेरे बिपरीत चर्चा की. बस इतना प्रमाण मेरे कहने की सचाई प्रगट करने के लिये बहुत है" हरकिशोर कहने लगा "आप का यह बरताव केवल मेरे संग नहीं बल्कि सब संसार के संग है. आप सबकी नुकतेचीनी किया करते हैं"

"अब तो तुम अपनी बात को सब संसारके साथ मिलाने लगे. परन्तु तुम्हारे कहने सै यह बात अंगीकार नहीं हो सकती. जो मनुष्य आप जैसा होता है वैसाही संसार को समझता है. मैंने अपना कर्तव्य समझकर अपने मन के सच्चे, सच्चे बिचार तुम सै कह दिए. अब उन्को मानो या न मानो तुम्हें अधिकार है" लाला ब्रजकिशोर ने स्वतन्त्रता सै कहा.

"आप सच्ची बात के प्रगट होने सै कुछ संकोच न करें. सम्बन्धी हो अथवा बिगाना हो जिससै अपनी स्वार्थ हानि होती है उससै मनमें अन्तर तो पड़ही जाता है" हरकिशोर कहने लगा "स्यमन्तक मणि के संदेह पर श्रीकृष्ण-बलदेव जैसे भाईयों में भी मन चाल पड़ गई. ब्रह्मसभा में अपमान होने पर दक्ष और महादेव (ससुर-जंवाई) के बीच भी बिरोध हुए बिना न रहा."

"तो यों साफ क्यों नहीं कहते कि मेरी तरफ सै अब तक तुम्हारे मन में वही बिचार बन रहे हैं. मुझको कहना था वह कह चुका अब तुम्हारे मन में आवे जैसे समझते रहो" लाला ब्रजकिशोर ने बेपरवाई सै कहा.

"चालाक आदमियों की यह तो रीति ही होती है कि वह जैसी हवा देखते हैं वैसी बात करते हैं. अबतक मदनमोहन सै आपकी अनबन रहती थी अब मुकदमों का समय आते ही मेल हो गया ! अबतक आप मदनमोहन सै मेरी मित्रता छुड़ाने का उपाय करते थे अब मुझको मित्रता रखने के लिये समझाने लगे ! सच है. बुद्धिमान मनुष्य जो करना होता है वही करता है परन्तु ओरों का ओलंभा मिटाने के लिये उनके सिर मुफ्त का छप्पर जरूर धर देता है. अच्छा आपको लाला मदनमोहन की नई मित्रता के लिये बधाई है और आपके मनोर्थ सफल करने का उपाय बहुत लोग कर रहे हैं" हरकिशोर ने भरमा भरमी कहा.

"यह तुम क्या बक्ते हो मेरा मनोर्थ क्या है ? और मैंने हवा देखकर कौन्सी चाल बदली ?" लाला ब्रजकिशोर कहने लगे "जैसे नावमें बैठने वाले को किनारे के बृक्ष चल्ते दिखाई देते हैं इसी तरह तुम्हारी चाल बदल जाने से तुमको मेरी चाल में अन्तर मालूम पड़ता है. तुम्हारी तबियत को जाचने के लिये तुमने पहले से कुछ नियम स्थिर कर रखे होते तो तुमको ऐसी भ्रान्ति कभी न होती. मैं ठेठ सै जिस्तरह मदनमोहन को चाहता था, जिस तरह तुमको चाहता था, जिस्तरह तुम दोनों की परस्पर प्रीति चाहता था उसी तरह अब भी चाहता हूँ परन्तु तुम्हारी तबियत ठिकाने नहीं है इससे तुम को बारबार मेरी चाल पर संदेह होता है सौ खैर ! मुझे तो चाहै जैसा समझते रहो परन्तु मदनमोहन के साथ बैर भाव मत रक्खो. तुच्छ बातों पर कलह करना अनुचित है और बैरी सै भी बैर बढ़ाने के बदले उसके अपराध क्षमा करने में बड़ाई मिलती है."

"जी हां ! पृथ्वीराज ने शहाबुद्दीन गोरीको क्षमा करके जैसी बड़ाई पाई थी वह सब को प्रगट है" हरकिशोर ने कहा.

"आगे को हानि का संदेह मिटे पीछे पहले के अपराध क्षमा करने चाहिये परन्तु पृथ्वीराज ने ऐसा नहीं किया था इसी सै धोखा खाया और....."

"बस, बस यहीं रहने दीजिये. मेरा मतलब निकल आया. आप अपने मुख से ऐसी दशा में क्षमा करना अनुचित बता चुके उससे आगे सुन्कर मैं क्या करूंगा ?" यह कह कर हरकिशोर, ब्रजकिशोर के बुलाते, बुलाते उठ कर चला गया.

और ब्रजकिशोर भी इनहीं बातों के सोच बिचार में वहां सै उठ कर पलंगपर जा लेटे.



परीक्षा-गुरु – Pariksha Guru

परीक्षा गुरु हिन्दी का प्रथम उपन्यास था जिसकी रचना भारतेन्दु युग के प्रसिद्ध नाटककार लाला श्रीनिवास दास ने 25 नवम्बर, 1882 को की थी।

परीक्षा गुरु पहला आधुनिक हिंदी उपन्यास था। इसने संपन्न परिवारों के युवकों को बुरी संगति के खतरनाक प्रभाव और इसके परिणामस्वरूप ढीली नैतिकता के प्रति आगाह किया। परीक्षा गुरु नए उभरते मध्यम वर्ग की आंतरिक और बाहरी दुनिया को दर्शाता है। पात्र अपनी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखते हुए औपनिवेशिक समाज के अनुकूल होने की कठिनाई में फंस जाते हैं। हालांकि यह जाहिर तौर पर विशुद्ध रूप से 'पढ़ने के आनंद' के लिए लिखा गया था। औपनिवेशिक आधुनिकता की दुनियां भयावह और अप्रतिरोध्य दोनों लगती है।

उपन्यास पाठक को जीने का 'सही तरीका' सिखाने की कोशिश करता है और सभी समझदार पुरुषों से सांसारिक बुद्धिमान और व्यावहारिक होने, अपनी परंपरा और संस्कृति के मूल्यों में निहित रहने और सम्मान और सम्मान के साथ जीने की उम्मीद करता है। पात्र अपने कार्यों के माध्यम से दो अलग-अलग दुनियाओं को जोड़ने का प्रयास करते हैं; वे नई कृषि प्रौद्योगिकी को अपनाते हैं, व्यापारिक प्रथाओं का आधुनिकीकरण करते हैं, भारतीय भाषाओं के उपयोग को बदलते हैं जिससे वे पश्चिमी विज्ञान और भारतीय ज्ञान दोनों को अपनाने में सक्षम हो जाते हैं। युवाओं से समाचार पत्र पढ़ने की स्वस्थ आदत विकसित करने का आग्रह किया जाता है। यह सब पारंपरिक मूल्यों का त्याग किए बिना हासिल किया जाना चाहिए।

इस उपन्यास उपन्यास 41 छोटे-छोटे प्रकरणों में विभक्त है। कथा तेजी से आगे बढ़ती है और अंत तक रोचकता बनी रहती है। पूरा उपन्यास नीतिपरक और उपदेशात्मक है। उसमें जगह-जगह इंग्लैंड और यूनान के इतिहास से दृष्टांत दिए गए हैं। ये दृष्टांत मुख्यतः ब्रजकिशोर के कथनों में आते हैं। इनसे उपन्यास के ये स्थल आजकल के पाठकों को बोझिल लगते हैं। उपन्यास में बीच-बीच में संस्कृत, हिंदी, फारसी के ग्रंथों के ढेर सारे उद्धरण भी ब्रज भाषा में काव्यानुवाद के रूप में दिए गए हैं। हर प्रकरण के प्रारंभ में भी ऐसा एक उद्धरण है। उन दिनों काव्य और गद्य की भाषा अलग-अलग थी। काव्य के लिए ब्रज भाषा का प्रयोग होता था और गद्य के लिए खड़ी बोली का। लेखक ने इसी परिपाटी का अनुसरण करते हुए उपन्यास के काव्यांशों के लिए ब्रज भाषा चुना है।

परीक्षा-गुरु - Pariksha Guru in Hindi

1. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१ सौदागरकी दुकान
2. परीक्षा-गुरु प्रकरण- २ अकालमें अधिकमास
3. परीक्षा-गुरु प्रकरण- ३ संगतिका फल
4. परीक्षा-गुरु प्रकरण-४ मित्रमिलाप
5. परीक्षा-गुरु प्रकरण-५ विषयासक्त
6. परीक्षा-गुरु प्रकरण-६ भले बुरे की पहचान
7. परीक्षा-गुरु प्रकरण – ७ सावधानी (होशयारी)
8. परीक्षा-गुरु प्रकरण-८ सबमें हां
9. परीक्षा-गुरु प्रकरण-९ सभासद
10. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१० प्रबन्ध (इन्तजाम)
11. परीक्षा-गुरु प्रकरण-११ सज्जनता
12. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१२ सुख दुःख
13. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१३ बिगाड़का मूल- बिवाद
14. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१४ पत्रव्यवहा
15. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१५ प्रिय अथवा पिय ?
- 16.
17. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१६ सुरा (शराब)
18. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१७ स्वतन्त्रता और स्वेच्छाचार.
19. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१८ क्षमा
20. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१९ स्वतन्त्रता
21. परीक्षा-गुरु प्रकरण – २० कृतज्ञता
22. परीक्षा-गुरु प्रकरण-२१ पति ब्रता
23. परीक्षा-गुरु प्रकरण-२२ संशय
24. परीक्षा-गुरु प्रकरण-२३ प्रामाणिकता
25. परीक्षा-गुरु प्रकरण -२४ (हाथसै पै दा करने वाले) (और पोतड़ों के अमीर)
26. परीक्षा-गुरु प्रकरण -२५ साहसी पुरुष
27. परीक्षा-गुरु प्रकरण -२६ दिवाला
28. परीक्षा-गुरु प्रकरण -२७ लोक चर्चा (अफवाह).
29. परीक्षा-गुरु प्रकरण -२८ फूट का काला मुंह
30. परीक्षा-गुरु प्रकरण -२९ बात चीत.
31. परीक्षा-गुरु प्रकरण -३० नै राश्य (नाउम्मेदी).
32. परीक्षा-गुरु प्रकरण -३१ चालाक की चूक
33. परीक्षा-गुरु प्रकरण -३२ अदालत
34. परीक्षा-गुरु प्रकरण -३३ मित्रपरीक्षा
35. परीक्षा-गुरु प्रकरण-३४ हीनप्रभा (बदरोबी)
36. परीक्षा-गुरु प्रकरण-३५ स्तुति निन्दा का भेद
37. परीक्षा-गुरु प्रकरण-३६ धोके की टट्टी
38. परीक्षा-गुरु प्रकरण-३७ बिपत्तमें धैर्य

39. परीक्षा-गुरु प्रकरण-३८ सच्ची प्रीति

40. परीक्षा-गुरु प्रकरण -३९ प्रेत भय

41. परीक्षा-गुरु प्रकरण ४० सुधारने की रीति

42. परीक्षा-गुरु प्रकरण ४१ सुखकी परमावधि